SHRI S M. BANERJEE (Kanpur). I do not want your commitment. Three workers have been killed..

MR. SPEAKER: These motions came from three hon. Members, *viz.*, Sarvashri Vajpayee, Sathe and Priya Ranjan Das Munshi to raise the matter about the reported notice given by members of the Indian Hockey Team for the World Cup Tournament that they would refuse to play in the Kuala Lumpur Tournament, in case the team was not cleared within three days. So, I have mentioned the names, but only one member will speak. I saw the order of the receipt of the notices and Shri Vajpayee's name is the first

Now Shri Vajpayee

MATTER UNDER RULE 377

12.35 hrs.

REPORTED NOTICE BY MEMBERS OF INDIAN HOCKEY TEAM FOR WORLD CUP TOURNAMENT

श्री अटलबिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय 1 मार्च को क्वाला लम्पूर मे वर्ल्ड कप टूर्नामेंट हो रहा है। टूर्नामेंट के बारे मे देश मे बड़ी आशाये लगाई गई है। जनता अपने खिलाडियो मे अपेक्षा करती है कि वे हाकी के क्षेत्र मे भारत की कीर्ति को क्वाला लाम्पूर मे पुन कायम करेगे, लेकिन जो खबरे मिली है, उनसे ऐसा लगता है कि हमारे खेलो को भी राजनीति ने दूषित कर दिया है। दो सघ बने हुये है, इण्डियन ओलम्पिक एसोसिएशन और इडियन हाकी फैडरेशन। यह भी प्रकाश मे आया है कि हाकी फैडरेशन मे दलबन्दी हो गयी है। श्री गजेन्द्रगडकर को काम सौंपा गया था कि वे वहा चुनाव करायें लेकिन जब उन्होने वहा की हालत देखी तो उन्होने चुनाव कराने से मना कर दिया। बाद मे शिक्षा मत्रालय के कोई अधिकारी गये थे जिन्हे सभी ने स्वीकार नही किया। अब नतीजा यह है कि हाकी फैडरेशन के लोग आपस मे लड रहे हैं। जो वर्ल्ड टूर्नामेंट कराने वाला सगठन है, वह इस बात पर बल दे रहा है कि ओलम्पिक एसोसियेशन जिस टीम को भेजेगी, उसे मान्यता दी जाएगी। हमारे खिलाडी तीन महीने से प्रति दिन कई घटे अभ्यास करने मे लगा रहे है लेकिन उन्हें कोई यह कहने वाला नही है कि वे क्वाला लाम्पूर जायें। आज के अखबारो मे जो कुछ छपा है, उसे पढ कर सब लोगो को दु ख होगा। खिलाडियो की ओर से कहा गया है

"We are left with no alternative. After all we are also human beings and all this dirty politics and uncertainly do affect our morale and game We have been practising here for more than seven hours a day for three months to bring back the lost glory But this wretched politics and infighting have completely dampened our spirits"

खिलाडियो ने यह भी अपील की है कि प्रधान मत्री इस मामले मे दखल दे तुरन्त निर्णय होना चाहिये लेकिन शिक्षा मत्रालय इस सारे मामले मे कार्यवाही करने मे विफल रहा है। आप शिक्षा मत्री महोदय से कहे कि वे सदन मे आ कर इस बारे मे बयान दे। झगडे बाद मे तय होते रहेगे, खिलाडियो को भेजने के बारे मे फैसला होना चाहिये। खिलाडी अच्छे मन से और विजय की आकाक्षा मे क्वाला लम्पूर जाये, यह आवश्यक है, लेकिन खिलाडियो ने चेतावनी दी है कि अगर तीन दिन मे निणय नही हुआ, तो वे नही जायेगे। शिक्षा मत्रालय और शिक्षा मत्री या तो सचमच खेल का विभाग छोड दे, खिलाडियो के साथ मनमाना आचरण नही हो सकता। आप खेल का मत्रालय अलग बना सकते है, लेकिन अगर मत्रालय अलग नही बना सकते तो मत्री जो खेलो के प्रति जिम्मेवार हैं, उनमे खिलाडी की भावना तो होनी चाहिये। वे किसी नौकरशाह को भेज देते है जो सरकारी दफ्तर के तरीके से खिलाडियो से निपटना चाहता है। शिक्षा

मंत्रालय के कुछ अफसर दलबन्दी मे फस गये है ।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) : प्रश्न यह नही है। शिक्षा मंत्रालय ने गजेन्द्रगडकर को बहाल किया और एसोसिएशन का चनाव हो गया लेकिन इडियन ओलम्पिक एसोसिएशन के श्री भालेन्द्र सिह महाराज जो सभापति है, वे उसको मानते नही और टीम को जाने नही देते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : श्री गजेन्द्रगडकर ने चुनाव करने से इन्कार कर दिया ।

श्री भागवत झा आजाद इण्डियन हाकी फेडेरेशन का चुनाव हो गया है लेकिन ओलम्पिक एसोसिएशन उसको नही मानता, लेकिन मैं यह मानता हू कि गवर्नमेंट इन्टरफियर करे सख्ती के साथ और टीम भेजे । यह सही बात है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का हस्तक्षेप ऊचे स्तर पर होना चाहिये और तुरन्त हस्तक्षेप करके इस मामले को निपटाना चाहिए । हमारी टीम क्वाला लम्पूर जाय, इस तरह का प्रबन्ध होना चाहिये ।

MR SPEAKER I will ask the Minister to make a statement

---

12 40 hrs.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS

SHRI C M STEPHEN (Muvattupuzha) Mr Speaker, Sir, I beg to move.

"That an Address be presented to the President in the following terms —

"That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 17th February, 1975' "

Sir, I move this with a deep sense of gratification and feeling of fulfilment It so happens that the discussion on the President's Address take place this year as in the last year of the Fifth Lok Sabha Next year when the President addresses both the Houses in a joint session the composition of this House will have changed and many of the comrades who have been here will have gone out of the scene and many new faces will have come to the scene It is in the fitness of things and it is inevitable, I should say that a dynamic democracy which represents a nation is changing from time to time There is nothing static about our functioning because change is inherent in the very nature of things

The President has given us a very comprehensive picture of the state of affairs of the nation He told us about the unexpected and stupendous changes that the nation faced in the course of the last four years and he has made a review of the events that have been taking place and an appraisal of the situation—economic and political—that we are facing

He has brought into focus the state of affairs with respect to our relationship with the neighbouring countries and the countries all over the world And he has gone ahead and looking to the future, cautioned us that in spite of the achievements that we have made there is no room for complacency and that we have got to be cautious against the developments that are in store for us.

For such a truthful and correct portrayal of the picture of the nation, I am sure, this House will be grateful to the head of the State for his faithful discharge of his function Now, Sir, looking backard, speaking about the unexpected and stupendous chal-